अध्याय - IX

सीमा सड़क संगठन

सीमा सड़क संगठन, सड़क निर्माण कार्यपालक बल है जो सेना का अंशतः अभिन्न अंग है और उसकी सहायता के लिए कार्य करता है । इसने केवल दो परियोजनाओं-पूर्व में परियोजना टस्कर (जिसका नाम बदल कर परियोजना वरतक रखा गया) और पश्चिम में परियोजना बेकॉन के साथ मई, 1960 में अपना कार्य शुरू किया था। यह आज बढ़कर 13 परियोजनाओं वाला कार्यपालक बल हो गया है और इसकी सहायता के लिए एक पूर्ण रूप से संगठित भर्ती/प्रशिक्षण केंद्र है, संयंत्र/उपस्कर मरम्मत के लिए दो पूर्ण रूप से सुसज्जित बेस कार्यशालाएं है तथा माल सूची प्रबंधन के लिए दो इंजीनियर भंडार डिपो हैं ।

9.1.2 सीमा सड़क संगठन ने न केवल उत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्र के सीमावर्ती क्षेत्रों को देश के साथ जोड़ा है बल्कि बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप-समूह, उत्तरांचल और छत्तीसगढ़ में सड़क अवसंरचना का विकास भी किया है ।

सीमा सड़क संगठन के कार्य

9.1.3 सीमा सड़क संगठन का गठन रक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप सामान्य स्टाफ सड़कों के रूप में वर्गीकृत सीमा क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण और अनुरक्षण के लिए किया गया । सामान्य स्टाफ सड़कों का विकास और अनुरक्षण सड़क परिवहन और राजमार्ग विभाग द्वारा सीमा सड़क विकास बोर्ड को उपलब्ध कराई गई निधियों से किया जाता है ।

श्रीनगर बाईपास पर कार्य प्रगति पर

9.1.4 जी एस सड़कों के अतिरिक्त सीमा सड़क संगठन, केंद्र सरकार के अन्य मंत्रालयों और विभागों द्वारा सौंपे गए एजेंसी कार्य भी करता है । सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राज्य सरकारों और अन्य अर्द्ध-सरकारी संगठनों द्वारा सौंपे गए कार्य डिपोजिट कार्यों के रूप में किए जाते हैं । पिछले कुछ वर्षों से सीमा सड़क संगठन ने हवाई क्षेत्र, स्थायी इस्पात और पूर्व-प्रतिबलित कंक्रीट पुलों, आवास परियोजनाओं के निर्माण में कार्य करके अपने कार्यों का विविधीकरण किया है ।

महत्वपूर्ण उपलब्धियां

- 1355.82 करोड़ रु0 की अनुमानित लागत से 9 कि.मी. लंबी रोहतांग सुरंग, इसके प्रवेश द्वारों के लिए पहुंच सड़क तथा लेह के लिए 292 कि.मी. लंबे वैकल्पिक मार्ग का निर्माण कार्य संगठन को सौंपा गया था । इस परियोजना पर 26 मई, 2002 को कार्य शुरू हुआ और इसे सन् 2012 तक पूरा किया जाना है ।

- सीमा सड़क संगठन को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की ओर से राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना के उत्तर - दक्षिण महामार्ग के एक भाग के तौर पर पठानकोट से श्रीनगर तक राष्ट्रीय राजमार्ग 1 ए को चार लेन का बनाने का कार्य सौंपा गया है । इस परियोजना की अनुमानित लागत 83.88 करोड़ रु0 है और इसे 36 माह में पूरा किया जाना है । पठानकोट से जम्मू (राष्ट्रीय राजमार्ग 1ए) तक 17.20 कि.मी. लंबे चार लेन के एक्सप्रेस वे का निर्माण कार्य प्रगति पर है ।

- "पूर्वोत्तर क्षेत्र विशेष त्वरित सड़क विकास कार्यक्रम का चरण- 'क'" का कुछ कार्य सीमा सड़क संगठन को सौंपा गया है । इस कार्य में चरणबद्ध कार्यक्रम के अंतर्गत नई सड़कों का निर्माण और मौजूदा सड़कों का दो लेन मानकों के अनुरूप सुधार कार्य शामिल है । चरण ' क' के अंतर्गत 691 करोड़ रु. की अनुमानित लागत से 487 कि.मी. सड़कों को चौड़ा करने और चरण ' ख' में अभिनिर्धारित सड़कों के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के कार्य सीमा सड़क संगठन को सौंपे गए हैं ।

- सीमा सड़क संगठन को अंडमान और निकोबार द्वीप-समूह के सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में सड़कों के पुनर्निर्माण का कार्य सौंपा गया है । उत्तर-दक्षिण सड़क के लिए 14 करोड़ रु. की अनुमानित धनराशि का प्राक्कलन प्रस्तुत कर दिया गया है और इस सड़क के लिए जॉब संख्या 900/179 के अंतर्गत 2.18 करोड़ रुपए की आंशिक स्वीकृत दी गई है । यह कार्य प्रगति पर है ।